

गाये जा तू गाये जा SSSSS

प्रभु राम भजन कर ले

जनम अखारत जाये न तेरा

कुढ़ तो जतन कर ले SSS पगले SSS

कुढ़ तो जतन कर ले SSS पगले SSS

कुढ़ तो जतन कर ले-

लख चौरासी भटक-भटक के

मानव तन में आये हो

नींद, भूख और झौक में अपना

विरथा समय गमाये हो

आने वाली कठिन घड़ी का SSSS

आने वाली कठिन घड़ी का, कुढ़ सुमरन कर ले

जनम अखारत... गाये जा....

देव सभी हैं मानव तन में, इसका तुम्हें ख्याल नहीं

पूजा पाठ किया न तूने

इसका इन्हें मलाल नहीं

बचा समय कम ओ दीवाने SSSS

बचा समय कम ओ दीवाने, अब तो नमन कर ले

जनम अखारत... गाये जा....

धन-दौलत और माल खजाने
 इसमें ही भरमाया है
 रात-दिना धन के लालच में
 अपना समय गमाया है
 फिर पढ़ताये तो क्या होगा sss
 फिर पढ़ताये तो क्या होगा, नीर नयन भरले
 जनम अखारत..... गाये जा.....

राम भजन का एक सहारा
 यही साथ में जायेगा
 झूठी माया पड़ी रहेगी
 खाली हाथों जायेगा
 "श्रीबाबाश्री" अपने हिय में तू sss
 "श्रीबाबाश्री" अपने हिय में तू, राम रतन धर ले
 जनम अखारत..... गाये जा.....